ब्रह्मचारिणी माता की कथा

धार्मिक मान्यता के अनुसार मां ब्रह्मचारिणी का जन्म पर्वतराज हिमालय के घर हुआ था। इसके बाद नारद की सलाह मानकर उन्होंने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तपस्या की। उनकी कठोर तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा जाता है। ऐसा कहा जाता है कि देवी ने अपनी तपस्या के पहले 1000 वर्ष केवल फल और फूल खाकर बिताए, इसके बाद 100 वर्षों तक जमीन पर बैठकर सब्जियों पर निर्भर रहीं और बारिश और धूप की परवाह किए बिना अपनी तपस्या जारी रखी।

3000 वर्षों तक उन्होंने केवल टूटे हुए बिल्व पत्र खाए और भगवान शिव की पूजा की। अंततः उसने भी बिल्वपत्र लेना बंद कर दिया और फिर निर्जला व्रत रखकर तपस्या करने लगी। देवी की घोर तपस्या के कारण उनका शरीर पूरी तरह थक गया था। बाद में, उन्होंने पत्ते खाना बंद कर दिया और देवी का नाम अपर्णा रखा।

देवी की कठोर तपस्या से प्रसन्न होकर ऋषि–मुनियों और सिद्धों ने उन्हें प्रणाम किया और कहा, "देवी, इस कठोर तपस्या का फल तुम्हें अवश्य मिलेगा, महादेव तुम्हारे पति हैं।"

pdfinbox.com